Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jain college, ara

Notes for B.A part 3, paper 5

Topic :–बाबर के कार्यों का एक मूल्यांकन (An Estimate of the Works of Babar)

अनेक इतिहासकारों ने बाबर की प्रशंसा उसके चारित्रिक गुणों, उसकी सैन्य प्रतिभा, प्रशासकीय एवं कलात्मक अभिरुचियों के आधार पर किया है। बाबर का जीवनचरित्र एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है। बाल्याकाल से ही कठिनाइयों से जूझते रहने के बावजूद उसने कभी अपना धैर्य नहीं खोया और सदैव अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में संलग्न रहा। यद्यपि उसमें वंशगत क्रूरता की भावना मौजूद थी; तथापि, स्वभाव से वह दयालु प्रवृत्ति का व्यक्ति था। वह अपने सगे-संबंधियों से प्रेमपूर्ण एवं उदारतापूर्ण व्यवहार करता था। उसका नैतिक स्तर भी बहुत ऊँचा था। बाबर की ख्याति मुख्यतया उसके सैनिक गुणों के कारण ही है। वह एक वीर सैनिक एवं कुशल सेनानायक था। वह घुड़सवारी, निशानेबाजी तथा तलवार चलाने में निपुण था। अपनी सैनिक प्रतिभा के बल पर ही, वह फरगना के छोटे से राज्य के शासक से भारत में नए राजवंश का संस्थापक बन गया। भारत आने के पूर्व उसे अनेक बार अपना राज्य खोना पड़ा; परंतु उसने कभी हिम्मत नहीं हारी और संघर्ष करता रहा। अंततः, उसे विजयश्री हासिल हुई। बाबर ने अपनी सैनिक प्रतिभा भारत में भी दिखाई। वस्तुतः, कुशल सैन्य-संचालन के आधार पर ही भारत में वह अफगानों और राजपूतों की विशाल सेना को अपनी छोटी-सी सैनिक टुकड़ी से परास्त कर सका। बाबर अपने सहयोगियों से सदैव मित्रतापूर्ण व्यवहार करता था। अपने अमीरों, बेगों और सैनिकों को उसने पर्याप्त धन एवं जागीर दिया जिससे वे उसके समर्थक और प्रशंसक बने रहे। यद्यपि बाबर ने राणा सांगा के विरुद्ध राजनीतिक कारणों से प्रेरित होकर 'जिहाद' की घोषणा की, तथापि वह धर्मांध नहीं था। कट्टर सुन्नी होते हुए भी उसने शियाओं पर अत्याचार नहीं किया। इसी प्रकार भारत विजय के पश्चात भी हिंदुओं पर अत्याचार करने एवं उनके मंदिरों को नष्ट करने का उदाहरण बहुत कम मिलता है। बाबर में साहित्यिक एवं कलात्मक प्रतिभा भी थी। वह अरबी और फारसी भाषाओं का अच्छा ज्ञाता था। उसे तुर्की साहित्य के दो सर्वाधिक प्रसिद्ध लेखकों में से एक माना जाता है। उसकी आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी की गणना विश्व के महान साहित्यिक ग्रंथों में की जाती है। वह संगीत प्रेमी भी था।बाबर की भारत-विजय अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। बाबर ही पहला शासक था, जिसने कुषाण साम्राज्य के पतन के पश्चात पहली बार भारतीय साम्राज्य में काबुल और कांधार को सम्मिलित किया। इससे भारतीय विदेशी व्यापार के विकास में मदद मिली। बाबर का दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य था तत्कालीन उत्तरी भारत के शक्ति संतुलन को नष्ट कर साम्राज्य स्थापना की प्रक्रिया का आरंभ करना। बाबर के आक्रमण ने भारतीय सैन्य व्यवस्था को भी गहरे रूप से प्रभावित किया। बारूद, तोपखाना और घुड़सवारी पर अब भारत में भी बल दिया जाने

लगा। प्रो सतीशचंद्र के अनुसार, "अपनी नई सैनिक पद्धति और व्यक्तिगत व्यवहार से बाबर ने राजा के उस महत्त्व को पुनः स्थापित किया, जो फिरोज तुगलक की मृत्यु के बाद कम हो गया था। बाबर ने राज्य का एक नया स्वरूप हमारे सामने रखा, जो शासक के सम्मान और शक्ति पर आवृत था, जिसमें धार्मिक और सांप्रदायिक मदांघता नहीं थी, जिसमें संस्कृति और ललित कलाओं का बड़े ध्यानपूर्वक पोषण किया जाता था। इस प्रकार, उसने अपने उत्तराधिकारियों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करके उनका मार्ग-दर्शन किया।" संभवतः इसीलिए एक इतिहासकार ने बाबर को अपने युग का एशिया का सबसे अधिक देदीप्यमान सम्राट् एवं किसी युग अथवा देश के सम्राटों में उच्च स्थान प्राप्त करने योग्य माना है'।अनेक विद्वान बाबर को एक वीर विजेता तो मानते हैं; परंतु साम्राज्यनिर्माता नहीं। लेनपूल का विचार है कि बाबर सिर्फ एक सैनिक था, साम्राज्य संस्थापक नहीं। यह सच है कि उसने भारत में मुगल वंश की नींव रखी, भारत में सिंधु से बिहार और हिमालय से ग्वालियर एवं चंदेरी तक विस्तृत राज्य की स्थापना की; परंतु, बाबर की यह विजय क्षणिक सिद्ध हुई। बाबर अफगानों की शक्ति को पूर्णरूप से कुचल नहीं सका । उसकी मृत्यु के साथ ही अफगानों ने पुनः अपनी शक्ति संगठित कर बाबर के उत्तराधिकारी हुमायूँ को भारत से खदेड़ दिया। अफगानों की सत्ता पुनः स्थापित हुई एवं मुगलों का शासन कुछ समय के लिए समाप्त हो गया।बाबर ने राज्य की स्थापना तो की; परंतु वह इसे स्थायित्व प्रदान नहीं कर सका। वह एक वीर विजेता था, एक कुशल प्रशासक नहीं। उसका सारा ध्यान युद्धों में ही लगा रहा। प्रशासन की तरफ वह समुचित ध्यान नहीं दे सका। एरस्किन उसके कार्यों पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं कि बाबर ने जो कार्य किए उनसे अधिक महत्त्वपूर्ण वे कार्य थे, जिन्हें वह पूरा नहीं कर सका। उसके राज्य में प्रशासनिक एकरूपता का अभाव था। प्रत्येक राज्य, जिला, नगर एवं ग्राम के अपने-अपने कानून थे। राजकुमारों की उच्छृंखल प्रवृत्ति पर रोक लगाने, न्यायव्यवस्था सुदृढ़ करने, अधिकारियों की मनमानी रोकने एवं राज्य की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ करने का कोई प्रयास बाबर नहीं कर सका। इसके विपरीत, लगातार युद्धों एवं अपने सहयोगियों को उदारतापूर्ण दान देने से बाबर का कोष बिल्कुल रिक्त हो गया। बाबर ने एक गलती और की, उसने अपना राज्य विभिन्न जागीरों में बाँटकर उन्हें विभिन्न जागीदारों को सौंप दिया। ये जागीरदार बराबर अपनी शक्ति बढ़ाने तथा सम्राट् के विरुद्ध विद्रोह करने का उपाय ढूँढ़ते रहते थे। इस प्रकार, बाबर ने अपने पुत्र के लिए एक ऐसा राजतंत्र छोड़ा, जो केवल युद्धकारी परिस्थितियों में ही सुसंगठित रह सकता था, शांतिकाल के लिए तो यह निर्बल, बिना व्यवस्थित रचना का और बिना रीढ़वाला था।" इन आलोचनाओं से बाबर के कार्यों का महत्त्व कम नहीं हो जाता है। वस्तुतः, उसे प्रशासनिक व्यवस्था की तरफ ध्यान देने का अवसर ही प्राप्त नहीं हुआ तथापि इस दिशा में उसकी सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी 'पाद शाही' का विकास करना। उसने तुर्क-अफगानों द्वारा धारण की जानेवाली 'सुलतान' की उपाधि त्याग दी एवं अपने आपको 'पादशाह' अथवा 'बादशाह' कहना आरंभ किया। उसने मुगल अमीरों को बराबरी का दर्जा नहीं दिया। उसने दैवी शक्ति पर आधृत सर्वशक्तिशाली बादशाहत की स्थापना की। अब राजा का आधार प्रजा की इच्छा नहीं, बल्कि दैवी इच्छा मानी गई। इससे बादशाह की शक्ति और प्रतिष्ठा में अत्यधिक वृद्धि हुई। बाबर ने अपनी सैनिक प्रतिभा के बल पर भारत में उस विशाल और वैभवशाली राजवंश की नींव डाली, जिसपर अकबर ने एक विशाल और सुदृढ़ साम्राज्य की

स्थापना की। लेनपूल बाबर को एक भाग्यशाली सैनिक, मध्य एशिया और भारत के बीच की कड़ी तथा मुगल साम्राज्य का संस्थापक मानते हैं।"